August - 2021 E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFEREED & INDEXED JOURNAL

SPECIAL ISSUE - 271

हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना

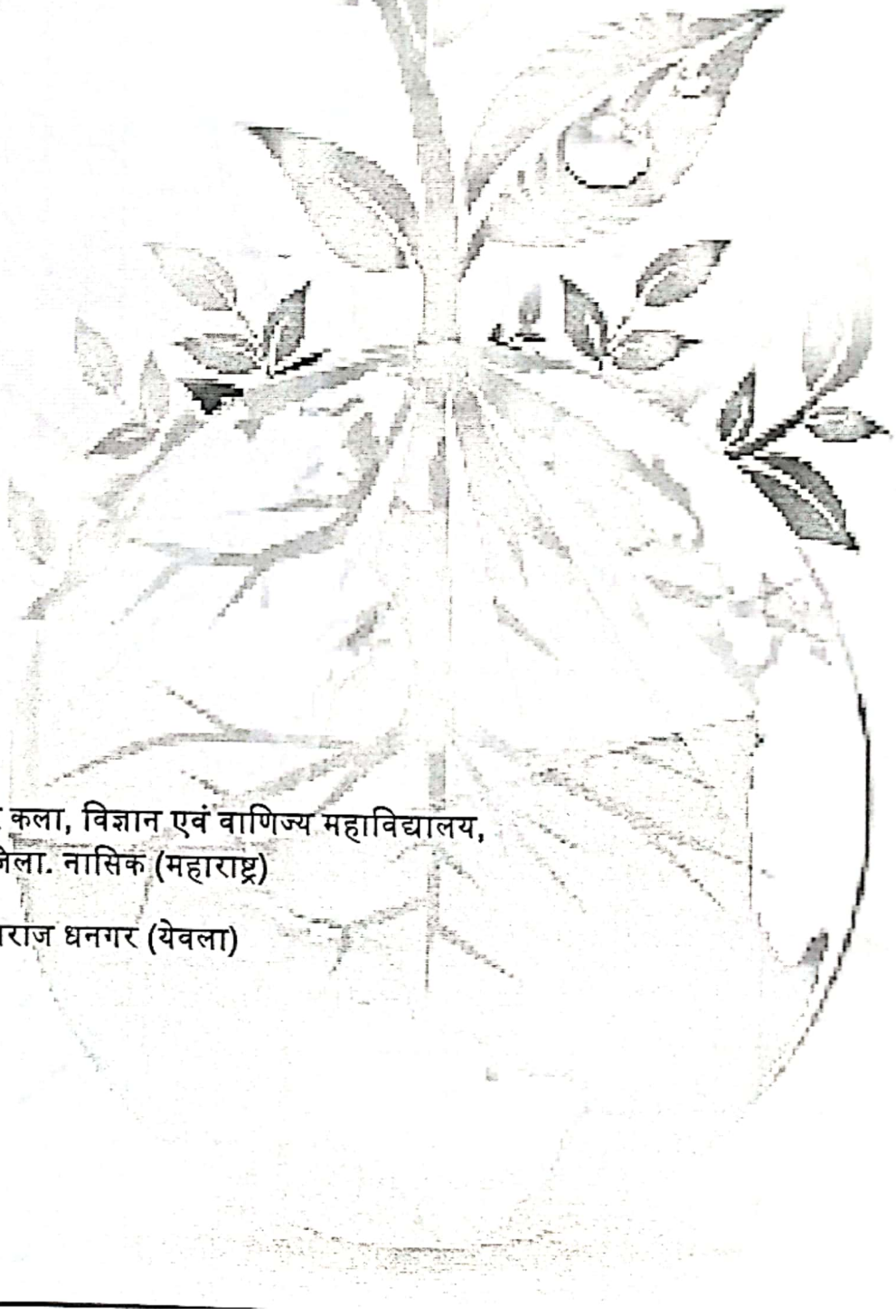

विशेषांक संपादक
प्रा. रवींद्र ठाकरे
हिंदी विभागाध्यक्ष,
समाजश्री प्रशांदादा हिरे कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
नामपूर, तह. सटाणा, जिला. नासिक (महाराष्ट्र)

मुख्य संपादक : डॉ. धनराज धनगर (येवला)

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATIO

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

अ.नं.	शीर्षक	लेखक /लेखिका	पृ. क्र.
✠	संपादकीय	प्रा. रवींद्र ठाकरे	06
1	समकालीन हिंदी काव्य साहित्य में जल पर्यावरण-चेतना	डॉ.बृजेश सिंह	08
2	राष्ट्रकवि डॉ. बृजेश सिंह की गज़लों में जल- पर्यावरण संरक्षण	प्रो. डॉ. अनिता नेरे, डॉ. योगिता हिरे	12
3	डॉ. शंभुनाथ सिंह की 'पेड़ की पुकार' कविता में पर्यावरण चेतना	डॉ. जिमाऊ मोरे	17
4	बिन पानी सब सून	डॉ. बालकवि सुरंजे, ज्योति बी. थोरात	20
5	अशोक जमनानी के 'स्वेटर'कहानी संग्रह में पर्यावरण चेतना	डॉ. संदीप देवरे	23
6	हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना	डॉ. वाल्मीक सूर्यवंशी	26
7	हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना और वास्तव	डॉ. सजित खांडेकर	29
8	हिंदी कहानी साहित्य में पर्यावरण चेतना	प्रा. कैलास बच्छाव	33
9	हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना	डॉ. पूनम बोरसे	36
10	हिंदी-मराठी के संत साहित्य में व्यक्त पर्यावरण-चेतना	डॉ. दत्तात्रेय येडले	40
11	पर्यावरण चेतना आधुनिकता बोध	डॉ. पुष्पा पुष्पध	44
12	समकालीन हिंदी कविता और पर्यावरण चेतना	डॉ. सुमन पलासिया	48
13	हिंदी आदिवासी कविता में पर्यावरण चेतना	डॉ. शशिकला सालुंके, प्रा. सविता तोडमल	52
14	बृजेश सिंह की गजलों में पर्यावरण चेतना	श्री भिकाजी कांबले	56
15	आधुनिक हिंदी कविता में अभिव्यक्त पर्यावरण चेतना	श्री अशोक पाटील	60
16	आधुनिक हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना	श्रीमती ज्योति	64
17	पर्यावरण चेतना के रंग में सराबोर कवि पंत	प्रा. स्मिता मिस्त्री	70
18	राष्ट्रकवि डॉ.बृजेश सिंह की गज़लों में पर्यावरण चेतना	प्रा. रवींद्र ठाकरे, प्रो.डॉ.अनिता नेरे	74
19	कवि सुमित्रानंदन पंत के काव्य में पर्यावरण चेतना	प्रा. हर्षल बच्छाव	80
20	हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना	डॉ. संजय धोटे	84
21	कामायनी महाकाव्य में पर्यावरण चेतना	हंसा बागरे	90
22	हिंदी काव्य में पर्यावरण चेतना	डॉ. नज़मा मलिक	97
23	कुइयांजान उपन्यास में पर्यावरण चेतना	प्रा. युवराज गातवे	102
24	हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना	प्रो. डॉ. जयश्री गावित, वंदना जाधव	105
25	हिंदी काव्य में पर्यावरण चेतना	डॉ. सुनिल पाटील	108
26	मीठी नीम: पर्यावरण संरक्षण का आदर्श पाठ	डॉ. मीना सुतवणी	114
27	उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में पर्यावरण चेतना	श्रीमती शबीना नाज	120
28	पर्यावरण के प्रहरी संत कवि	काग चांगाभाई मगनाजी	123
29	कवि सुमित्रानंदन पंत प्रकृति और वैश्विक महामारी	दिलीपकुमार गावित, डॉ. जशवंतभाई पंड्या	127
30	बाल कविताओं में पर्यावरण चिंतन	डॉ. गणेश शेकोकर	130
31	कामायनी में पर्यावरण चेतना	प्रा. शांताराम वलवी	137
32	विनोद चन्द्र पाण्डेय की कविता में पर्यावरण चेतना	डॉ. मनोहर माधवराव जगधाडे	142
33	तालाब हमारे प्रेरणास्रोत	डॉ. सुनिल चव्हाण	144
34	पर्यावरण की उपयोगिता एवं पर्यावरण संरक्षण : एक अध्ययन	डॉ. गीता, डॉ. ओकेंद्र	148
35	हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना	डॉ. भरत शेणकर	156
36	हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना	डॉ. मिनल बर्वे	159

Scanned with CamScanner

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Special Issue – 271 : हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
August - 2021

राष्ट्रकवि डॉ. बृजेश सिंह की गज़लों में जल - पर्यावरण संरक्षण

प्रो. डॉ. अनीता नेरे
शोध निर्देशक एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
श्रीमती पुष्पाताई हिरे महिला महाविद्यालय,
मालेगाँव कैम्प, जिला- नासिक (महाराष्ट्र)

डॉ. योगिता हिरे
हिन्दी विभागाध्यक्ष,
लोकनेते व्यंकटराव हिरे महाविद्यालय, पंचवटी,
नासिक (महाराष्ट्र)

भूमिका :-

प्रकृति और मानव का संबंध अन्योन्याश्रित है। प्रकृति के बगैर मानव के अस्तित्व की कल्पना भी नहीं की जा सकती। प्रकृति या पर्यावरण का मानव जीवन पर गहरा प्रभाव है। पर्यावरण में मानव को कई अनमोल उपहार दिए हैं। जिन्हें प्राप्त करके मनुष्य ने अपनी उन्नति का रास्ता आसान बनाया है। विकास की लालसा में मनुष्य ने प्रकृति का बेखौफ दोहन किया है।प्रकृति ने मनुष्य को शुद्ध हवा दी, शीतल और स्वच्छ जल दिया, तेज चिलचिलाती धूप से बचने के लिए छायादार पेड़ दिए। परंतु मनुष्य अपनी स्वार्थी प्रवृत्ति से बाज नहीं आया। यांत्रिक जीवन की चमक-दमक में आकर मनुष्य ने कल-कारखानों का निर्माण किया। मोटारकारों पर सवार होकर मनुष्य मिलों की दूरी घंटों में तय करने लगा। परिणामतः मोटरों और कारखानों से निकलने वाले धुएं ने शुद्ध हवा को प्रदूषित कर दिया। अलग-अलग रसायनों से मिश्रित नालों का जल जब नदी झरनों में सम्मिलित हुआ तब जल का प्रदूषण बढ़ गया। खेती, कारखानों, बड़ी-बड़ी कंपनियों को बसाने के लिए हरे भरे पेड़ों को काटकर वीरान किया गया। जिसके परिणाम स्वरूप पर्यावरण में ग्लोबल वार्मिंग, भयंकर अकाल जैसी वैश्विक समस्याएं निर्माण हो गई है। जिसके कारण मनुष्य ही नहीं अपितु सारी जीव सृष्टि का अस्तित्व खतरे में आ गया है।

वर्तमान समय में पर्यावरण संरक्षण के लिए अनेक संस्थाएं सरकार तथा समाजसेवी काम कर रहे हैं। पर्यावरण का संरक्षण सब का उत्तरदायित्व हो गया है।पर्यावरण का संतुलन अगर बिगड़ा तो आने वाले दिनों में धरती पर मानव समाज ही नहीं अपितु समस्त जीव सृष्टि के लिए खतरा निर्माण हो सकता है।
अतः मानव समाज को खतरे से आगाह करने के लिए हिंदी साहित्य की ग़ज़ल विधा का विशेष योगदान रहा है। शे'रों के माध्यम से ग़ज़लकार सोए हुए समाज में चेतना भरने का कार्य कर रहे हैं। ऐसे ग़ज़लकारों में सामाजिक, राजनीतिक, दार्शनिक, पारिवारिक, आर्थिक और पर्यावरण चेतना को बखूबी चित्रित किया गया है।

हिंदी ग़ज़ल विधा का स्वरूप और विकास :-

ग़ज़ल हिंदी की अत्यंत प्रभावी विधा है। 'गागर में सागर' भरने की क्षमता ग़ज़ल में है। तथा भावाभिव्यक्ति के लिए ग़ज़ल महत्वपूर्ण मानी जाती है। कवि कम शब्दों में अपने शे'रों के माध्यम से समाज में चेतना निर्माण करता है। इसलिए वर्तमान समय में ग़ज़ल सबसे लोकप्रिय विधा बन गई है।

ग़ज़ल का इतिहास काफी पुराना है। ग़ज़ल उर्दू की देन है। परंतु हिंदी ग़ज़ल में आज अपना अस्तित्व और लोकप्रियता स्वयं निर्माण की है। हिंदी साहित्य में ग़ज़ल लिखने की परंपरा बहुत प्राचीन है। अमीर खुसरो ने हिंदी ग़ज़ल का सूत्रपात किया। बाद में संत कबीर, भारतेंदु हरिश्चंद्र से होकर दुष्यंत कुमार तक ग़ज़ल का विकास होता रहा।दुष्यंत कुमार ने पहली बार ग़ज़ल को आम जन की पीड़ा के साथ जोड़ा और हिंदी ग़ज़ल की लोकप्रियता को व्यापक बनाया। वास्तव में दुष्यंत कुमार ने हिंदी ग़ज़ल को गरिमा दो और इसके बाद समकालीन ग़ज़लकारों ने इसकी वृद्धि की है। इनमें गोपालदास सक्सेना 'नीरज' ,शमशेर बहादुर सिंह, देवेंद्र

Scanned with CamScanner

शर्मा 'इंद्र',बेकल उत्साही, मुनव्वर राणा, निदा फ़ाज़ली, चंद्रसेन विराट, हरीश निगम, ओम प्रकाश चतुर्वेदी 'पराग', कमलेश भट्ट 'कमल', कुंवर बेचैन, विज्ञान व्रत, राम मेश्राम, शेरजंग गर्ग, डॉ. गौरी शंकर और राष्ट्रकवि डॉ .बृजेश सिंह प्रमुख हैं।

राष्ट्रकवि डॉ. बृजेश सिंह की ग़ज़लों में जल-पर्यावरण चेतना :-

राष्ट्रकवि डॉ. बृजेश सिंह वर्तमान हिंदी ग़ज़ल के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। इन्होंने 10,000 शे'रों की 'समाधान' शीर्षक से प्रबंध ग़ज़ल का निर्माण किया है। इस ऐतिहासिक रचना में संकलित 1,000 से भी अधिक शे'रों में जल के महत्व, जल के संरक्षण एवं जल के दुरुपयोग को दर्शाया गया है। इन 1000 शे'रों को विभाजित करके चुनिंदा 570 शे'रों का एक संग्रह 'जल-पर्यावरण -समाधान' शीर्षक से शशिभूषण तिवारी ने सन 2014 में प्रभाश्री विश्व भारती प्रकाशन इलाहाबाद से संपादन किया। यह संग्रह जल-पर्यावरण चेतना का इस्पाती दस्तावेज़ है।

कवि डॉ.बृजेश सिंह ने प्रस्तुत ग़ज़ल संग्रह में जल की निर्मिति से लेकर जल के उपयोग और मानव द्वारा जल की बर्बादी को मार्मिक शब्दों में बयान किया है। जल ही जीवन है। जल के बिना जीव सृष्टि का बचना नामुमकिन है।जल संकट वर्तमान समय की विश्व स्तरीय समस्या है। संभवतः अगला विश्व युद्ध पानी के लिए लड़ा जा सकता है अगर आज मनुष्य ने जल का संरक्षण नहीं किया, उसे संभालकर उपयोग में नहीं लाया तो आने वाली पीढ़ियों के लिए जल नहीं बचेगा। श्री शशि भूषण तिवारी ने इस ग्रंथ भूमिका में निर्दिष्ट किया है, "जल प्रकृति का अनूठा उपहार है। इसकी महत्ता को समझना बेहद जरूरी है। जल एक आम रासायनिक पदार्थ है,जोकि जीवन के सभी ज्ञान रूपों के अस्तित्व के लिए आवश्यक है।राष्ट्रकवि डॉ. बृजेश सिंह ने जल के महत्व को समझाने के लिए जल की वैज्ञानिक संरचना से लेकर जल की आध्यात्मिक महत्व तक का आख्यान अपनी ग़ज़लों में प्रस्तुत किया है"। [1]

ग़ज़लकार डॉ .बृजेश सिंह ने जल की महत्ता को स्पष्ट करते हुए जल को प्रकृति की अनमोल सौगात माना है। प्रकृति के इस अनमोल तोहफे को अगर हमने सुरक्षित नहीं किया. जल की अगर बेहिसाब बर्बादी की तो आने वाली नस्लें हमें और दूरदर्शिता के लिए कोसेंगी। कवि लिखते हैं

" पृथ्वी ने दिया हमें सौ बातों का खजाना है,
आदमी की हरकतें फक्त एहसान हो झूठ लाना है।
पृथ्वी प्रदत्त उपहारों में आकंठ डूबे हैं हम,
पर कुछ न कुछ तो धरती का कर्ज लौट आना है।
धरती को जल कुछ वापस दे सके अगर तो,
यह कृतघ्नता का बोझ कुछ सर से हटाना है।
पीढ़ियाँ अदूरंदर्शिता के लिए कोसेंगी,
संभल जाए अन्यथा भविष्य में पछताना है।
धरा को जल्द वापस करें,अगर खुद को
आगामी पीढ़ियों की नजरों में ना गिराना है। " [2]

जल प्रकृति में नवसंजीवनी भरने वाला मुख्य तत्व है ।अतः प्रकृति का सबसे महत्वपूर्ण खजाना है। प्राचीन काल से ऋषि, मुनि, संतो, महात्माओं और वैज्ञानिकों ने समय-समय पर जल की महत्ता को रेखांकित किया है। जल सृष्टि के विकास का आधार है ।आज वह समय आ गया है कि महापुरुषों, संतो और वैज्ञानिकों के विचारों को आत्मसात करके ही हमें चलना होगा। आज सबको अपने अंतर्मन से संकल्प करना होगा और जल संरक्षण को जीवन का मुख्य लक्ष्य बनाना होगा। तब ही मनुष्य जीवन में सुख- शांति और समृद्धि प्राप्त होगी कवि डॉ. बृजेश सिंह इस संदर्भ में लिखते हैं,-

Scanned with CamScanner

E-ISSN : 2348-7143
August - 2021

"जल व पर्यावरण की रक्षा करने की कोशिश ,
आदमी के वजूद को कायम रखता है ।
जल के अतिरिक्त से पनपी नहीं है सभ्यताएँ,
पानी की सीरत पानी से ही महकता है ।
जल से ही होता श्राद्ध, जल से ही आचमन ,
जल के बिना ना कोई संस्कार हो पाता है ।
वेद शास्त्र सब और देवता कहते 'बृजेश' ,
जल से ही आई दुनिया ,जल से ही सजाता है"। 3

जल हमारी दैनंदिन जिंदगी का अविभाज्य हिस्सा है । खाने-पीने , नहाने पचाने से लेकर सारे धार्मिक विधि श्राद्ध और संस्कार जल के बिना असंभव है। अतः सभी दृष्टियों से मानव जीवन में जल का असाधारण महत्व है। डॉ. डी. एस. ठाकुर जल की महत्ता को अभिव्यक्त करते हुए लिखते हैं,- "भारतीय सभ्यता नदियों से संपृक्त है । इसलिए भारतीय संस्कृति के प्रत्येक सोपान नदियों से अथवा प्रकारांतर से कहें तो जल से संबद्ध है । सिंधु घाटी , गंगा घाटी , नर्मदा घाटी , बेतवा घाटी आदि सभ्यताओं का विकास नदियों के किनारे ही हुआ है । इससे मनुष्य का जल से महत्वपूर्ण संबंध प्रमाणित होता है ।भारत में नदियों की महत्ता सर्वोपरि है ।गंगा को नदी नहीं अमृत जल प्रवाहिनी सुरसरि कहा जाता है ।यमुना कृष्ण प्रिया है । नर्मदा को संस्कृति स्रोतस्विनी कह कर पुराणकार ने अपनी श्रद्धा का निवेदन किया है ।" 4

राष्ट्रकवि बृजेश सिंह भारतीय सभ्यता और संस्कृति के पुजारी हैं। जीवनदायिनी नदियों की गोद में पलती सभ्यताओं की याद दिलाते हुए वे मानव को [illegible] पर सावधान करते हैं -

"हर प्राणी के लिए नदियां जीवनदायी होंगी ,
सदियों का इतिहास भी प्रमाण दर्शाता है ।
आदमी सदियों से नदियों को पूजता आया ,
जीवनदायिनी का पल-पल आभार मानता है ।
नदी घाटियों में पनपी आई सभ्यताएं ,
'बृजेश' मनुष्य से रिश्ता सदियों पुराना है ।" 5

जहां जल है वहां उसका मोल नहीं हो रहा । अनियंत्रित और निष्ठुरता से उसका उपयोग करके जल बर्बाद किया जा रहा है । परंतु मरुभूमि में अगर जाए तो वहां जल की एक एक बूंद का महत्व समझ में आता है। इस संदर्भ में डॉ. इंद्र बहादुर सिंह के विचार बड़े ही मौलिक हैं । वे लिखते हैं –"आज मानव सभ्यता उस बिंदु से आगे निकल चुकी है, जहां से वापस लौटना बेहद कठिन है। परंतु फिर भी हताश होकर बैठना उचित नहीं है। मानव जाति सामूहिक रूप से स्थिति की गंभीरता को समझते हुए धर्म पथ पर चलते हुए वैज्ञानिक चेतावनियों के आधार पर अपनी दिशा का निर्धारण करे । इसी में सबकी भलाई है और मानव का अस्तित्व भी इसी पर निर्भर है।" 6

कवि बृजेश सिंह ने जहां एक ओर अपनी गजलों में जल का महत्व , जल प्रदूषण के संकट , जल प्रदूषण के कारणों को उद्घाटित किया है , वहीं दूसरी ओर जल प्रदूषण से बचाव एवं संरक्षण की महत्ता को भी चित्रित किया है, वह लिखते हैं -

"नदियों से रिश्ता हमारा सनातन पुराना है ,
प्रत्येक तीर्थ में पुण्य का स्नान महकता है ।
सभी धर्मस्थल नदियों के तटों पर होते ,

Scanned with CamScanner

नदियों को पावन पवित्र शास्त्रों ने माना है।
महानदी कावेरी गोदावरी ब्रह्मपुत्र ,
गंगा नर्मदा को पतित पावनी ठहराना है।
कल कारखानों नाली के गंदे पानी से ,
जीवनदाई नदियों को नरक कुंड बनाना है।
जल स्रोत प्रदूषित करना महापाप वृजेश ,
शपथ लें न खुद को पाप का भागी बनाना है।" [7]

कवि जल की बर्बादी के सख्त विरोधी हैं। पहाड़ -पर्वत ,खेत-खलियान में बारिश का जो पानी आता है उसे हटाकर गड्ढों में एकत्रित करना चाहिए , जिससे भू जल स्तर में वृद्धि हो सकती है।बारिश के दिनों में छत पर गिरने वाले पानी को एक गड्ढे में समाविष्ट करें तो जलापूर्ति की समस्याओं को हल किया जा सकता है। जल साक्षारता के लिए रेनवाटर हार्वेस्टिंग रामबाण उपाय है। कवि की दृष्टि से सरोवर खोदना पुण्य का काम है। इन्हीं सरोवरों के सहारे खेती की सिंचाई होती है ,जिससे स्वादिष्ट फल और स्वस्थ अन्न उपजा जाता है।गाय-भैंसों एवं वन्य प्राणियों को पीने के पानी की समस्याओं से निजात मिलती है।अल्पभूधारक एवं मेहनतकशों को किल्लत भरी जिंदगी से छुटकारा पाने के लिए जल को हरसंभव बचाना जरूरी है। शादी-ब्याह ,पार्टियां , गृह प्रवेश तथा तीज -त्योहारों में भी जल को बचाना है।जल संरक्षण की पुकार लगाते हुए ग़ज़लकार डॉ.वृजेश सिंह लिखते हैं -

"प्रदूषण के विरुद्ध जमकर आवाज उठाना है,
पत्रकारिता को महती दायित्व निभाना है।
जल संरक्षण को खुलकर देना है समर्थन ,
सरकार संग जन-मन को भी आगे आना है।
पर्यावरण संरक्षण के कई कार्य अव्यवस्थित ,
और व्यवस्था सुधारने का अभियान चलाना है।
पर्यावरण संरक्षण के प्रति सबका ही दायित्व ,
पर्यावरणीय चेतना जन - मन में जगाना है।
पर्यावरण संरक्षण प्राथमिकता देनी 'वृजेश' ,
विकास के पीछे न इसे उपेक्षित बनाना है।"

कवि ने जीवन का रस तत्व जल को ही माना है। सृष्टि से पहले भी जल था और बाद में भी जल रहेगा। किंतु धरती के इस अनमोल रत्न को पानी की तरह बहाने पर कवि के मन में क्षोभ उत्पन्न होता है , जो सर्वथा उचित है।

निष्कर्ष -

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि, राष्ट्रकवि डॉ. वृजेश सिंह की ग़ज़लें जल-पर्यावरण चेतना का महत्वपूर्ण दस्तावेज है। सुप्रसिध्द जनवादी आलोचक डॉ. विनय कुमार पाठकइस संदर्भ में लिखते हैं –"जल को लेकर आने वाले कल में विश्वव्यापी संकट की चुनौती से हमें रू-ब-रू होना है। डॉ. वृजेश सिंह इसीलिए जल के संरक्षण व संवर्धन के लिए ,चेतना जागृत करने के लिए कई ग़ज़लों की रचना कर बैठते हैं ,जो न केवल पढ़ने के लिए है वरन जीवन को गढ़ने और आगे लड़ने के लिए भी सोपान है।" [9]

Scanned with CamScanner

ग़ज़लकार डॉ. बृजेश सिंह ने अपनी ग़ज़लों में सीधी ,सरल और प्रवाही खड़ी बोली हिंदी का प्रयोग करके जल चेतना का स्वर फूँका हैं। कहीं-कहीं प्रसंग अनुरूप मुहावरे ,कहावतें और सुक्तियों का प्रयोग भी मार्मिक बन गया है। कवि बृजेश सिंह की ग़ज़लों में जीवदया ,मानवता ,सहिष्णुता ,अहिंसा और परोपकार का भाव विद्यमान है। जल पर्यावरण चेतना वैश्विक समस्या है। अतः कवि ने अपनी ग़ज़लों में विश्व मानव कल्याण की कामना की है तथा 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना इन ग़ज़लों में सर्वत्र समायी हुई है।

संदर्भ : -

1) डॉ. बृजेश सिंह, जल पर्यावरण समाधान,संपा.तिवारी शशिभूषण, पृ.06
2) डॉ. बृजेश सिंह, जल पर्यावरण समाधान,संपा.तिवारी शशिभूषण, पृ. 47
3) डॉ. बृजेश सिंह, जल पर्यावरण समाधान,संपा.तिवारी शशिभूषण , पृ.49
4) ठाकुर डी. एस., राष्ट्रकवि डॉ.बृजेश सिंह की ग़ज़लों का साहित्यिक अनुशीलन पृ. 208 - 209
5) ठाकुर डी.एस.,राष्ट्रकवि डॉ.बृजेश सिंह की ग़ज़लों का साहित्यिक अनुशीलन, पृ. 208 - 209
6) संपा.सिंह आई.एन./ डॉ.बृजेश, पर्यावरण विमर्श, पृ .406
7) संपा .सिंह आई.एन. / डॉ.बृजेश, पर्यावरण विमर्श, पृ .74
8) संपा .सिंह आई.एन. / डॉ.बृजेश, पर्यावरण विमर्श, पृ .79
9) डॉ . सिंह इंद्रनाथ, महागजल समाधान में अभिव्यक्त चेतना, भूमिका

Scanned with CamScanner